नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत सत्र 2023-24 से पाठ्यपुस्तकों को पुनर्संयोजित किया गया है। यह संजीव पास बुक्स पूर्णतः नवीन पुनर्संयोजित पाठ्यपुस्तकों पर आधारित है।

पास बुक्स में नं. 1

संजीव®

पास बुक्स

सामाजिक विज्ञान-IX

(1) भारत और समकालीन विश्व-1 (2) समकालीन भारत-1
(3) लोकतान्त्रिक राजनीति-1 (4) अर्थशास्त्र
(कक्षा 9 के विद्यार्थियों के लिए नवीनतम पाठ्यक्रमानुसार)

- पाठ्यपुस्तक के सभी अभ्यास प्रश्नों का हल
- सभी प्रकार के अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नों का समावेश
- योग्य एवं अनुभवी लेखकों द्वारा लिखित
- प्रथम श्रेणी प्राप्त करने के लिए पूर्ण सामग्री

संजीव प्रकाशन,
जयपुर

मूल्य : ₹ 260/-

प्रकाशक :
संजीव प्रकाशन
धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता,
जयपुर-3
email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com
website : www.sanjivprakashan.com

© प्रकाशकाधीन

मूल्य : ₹ 260.00

लेजर टाइपसैटिंग :
संजीव प्रकाशन (D.T.P. Department), जयपुर

मुद्रक :
आधुनिक बुक बाईन्डर, जयपुर
★ ★ ★ ★

- इस पुस्तक में त्रुटियों को दूर करने के लिए हर संभव प्रयास किया गया है। किसी भी त्रुटि के पाये जाने पर अथवा किसी भी तरह के सुझाव के लिए आप हमें निम्न पते पर email या पत्र भेजकर सूचित कर सकते हैं—
  email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com
  पता : प्रकाशन विभाग
  संजीव प्रकाशन
  धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता, जयपुर
  आपके द्वारा भेजे गये सुझावों से अगला संस्करण और बेहतर हो सकेगा।
- इस पुस्तक में प्रकाशित किसी त्रुटि के प्रति तथा इससे होने वाली किसी भी क्षति के लिए लेखक, प्रकाशक, संपादक तथा मुद्रक किसी भी रूप में जिम्मेदार नहीं हैं।
- सभी प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र 'जयपुर' होगा।

विद्यार्थियों से

सत्र 2020-21 से माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान द्वारा कक्षा 9 में NCERT की पाठ्यपुस्तकों को पाठ्यक्रम में लगाया गया है। इसी क्रम में कक्षा 9 **सामाजिक विज्ञान** में भी NCERT की निम्न पाठ्यपुस्तकें लगायी गयी हैं—

1. भारत और समकालीन विश्व-1 (इतिहास)
2. समकालीन भारत-1 (भूगोल)
3. लोकतान्त्रिक राजनीति-1 (राजनीति विज्ञान)
4. अर्थशास्त्र

इन पाठ्यपुस्तकों में प्रत्येक अध्याय के अन्त में दिये गये अभ्यास प्रश्नों के अतिरिक्त अध्यायों के बीच-बीच में भी विभिन्न प्रकार के प्रश्न दिये हुए हैं। इन प्रश्नों में जो भी प्रश्न विद्यार्थियों के लिए उपयोगी हो सकते हैं उन सभी के उत्तर इस **संजीव पास बुक्स** में दिये जा रहे हैं। केवल ऐसे प्रश्न जो परीक्षा के दृष्टिकोण से अनुपयुक्त हैं उन्हें ही छोड़ा गया है। अध्याय के बीच-बीच में आये इन प्रश्नों को इस **संजीव पास बुक्स** में '**पाठ-सार**' के बाद '**पाठगत प्रश्न**' या '**क्रियाकलाप**' शीर्षक के अन्तर्गत दिया गया है। साथ ही विद्यार्थियों की सुविधा के लिए पाठ्यपुस्तक में जिस पृष्ठ पर प्रश्न दिये गये हैं उसकी पृष्ठ संख्या भी संजीव पास बुक्स में दी गयी है। **पाठगत/क्रियाकलाप प्रश्नों** के बाद पाठ्यपुस्तक के अध्यायों के अन्त में दिये गये प्रश्नों को '**पाठ्यपुस्तक के प्रश्न**' शीर्षक के अन्तर्गत दिया गया है। इसके बाद '**अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न**' शीर्षक के अन्तर्गत अध्यायों के मैटर पर परीक्षा के दृष्टिकोण से बनने वाले विभिन्न प्रकार के अन्य सम्भावित प्रश्न दिये गये हैं।

विषय-सूची

भारत और समकालीन विश्व-1 (इतिहास)

खण्ड-I : घटनाएँ और प्रक्रियाएँ

1. फ्रांसीसी क्रांति 1–17
2. यूरोप में समाजवाद एवं रूसी क्रांति 18–36
3. नात्सीवाद और हिटलर का उदय 36–57

खण्ड-II : जीविका, अर्थव्यवस्था एवं समाज

4. वन्य-समाज और उपनिवेशवाद 57–72
5. आधुनिक विश्व में चरवाहे 73–87

मानचित्र सम्बन्धी प्रश्न **88–90**

समकालीन भारत-1 (भूगोल)

1. भारत–आकार और स्थिति 91–100
2. भारत का भौतिक स्वरूप 100–114
3. अपवाह 114–129
4. जलवायु 130–151
5. प्राकृतिक वनस्पति तथा वन्य प्राणी 152–165
6. जनसंख्या 166–174

मानचित्र सम्बन्धी प्रश्न **174–178**

लोकतान्त्रिक राजनीति-1 (राजनीति विज्ञान)

1. लोकतन्त्र क्या? लोकतन्त्र क्यों? 179–196
2. संविधान निर्माण 196–210

3. चुनावी राजनीति 210–229
4. संस्थाओं का कामकाज 229–245
5. लोकतांत्रिक अधिकार 245–262

अर्थशास्त्र

1. पालमपुर गाँव की कहानी 263–280
2. संसाधन के रूप में लोग 280–293
3. निर्धनता : एक चुनौती 293–304
4. भारत में खाद्य सुरक्षा 304–314

सामाजिक विज्ञान–कक्षा IX

भारत और समकालीन विश्व-1 (इतिहास)

खण्ड I : घटनाएँ और प्रक्रियाएँ

1. फ्रांसीसी क्रान्ति

पाठ-सार

I. अठारहवीं सदी के उत्तरार्द्ध में फ्रांसीसी समाज–

(1) सन् 1774 में बूर्बो राजवंश का लुई XVI फ्रांस की राजगद्दी पर आसीन हुआ। राज्यारोहण के समय उसने राजकोष खाली पाया। राजकोष के खाली होने के कारण थे—लम्बे समय तक चले युद्ध, राजदरबार की शान-शौकत को बनाए रखने की फिजूलखर्ची, कर्ज का ब्याज। अपने नियमित खर्चों को चलाने के लिए फ्रांसीसी सरकार इस समय करों में वृद्धि करने को बाध्य हो गई थी। लेकिन यह कदम भी पर्याप्त नहीं था।

(2) अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में फ्रांसीसी समाज मध्यकालीन सामंती व्यवस्था का अंग था। समाज तीन वर्गों (एस्टेट्स) में बंटा हुआ था—

(i) **प्रथम एस्टेट**–पादरी वर्ग

(ii) **द्वितीय एस्टेट**–कुलीन वर्ग

(iii) **तृतीय एस्टेट**—जनसाधारण, जैसे—(a) समृद्ध एवं शिक्षित वर्ग (b) किसान और कारीगर (c) छोटे किसान, भूमिहीन मजदूर, नौकर आदि।

(3) प्रथम दो एस्टेट्स को करों से छूट आदि कुछ विशेषाधिकार जन्मना प्राप्त थे। कुलीन वर्ग को कुछ अन्य सामन्ती विशेषाधिकार भी प्राप्त थे। वह किसानों से सामन्ती कर वसूल करता था। तीसरे एस्टेट के सभी लोगों को सरकार को प्रत्यक्ष कर (टाइल) तथा अनेक अप्रत्यक्ष कर देने होते थे।

(4) चर्च भी किसानों से टाइद नामक एक धार्मिक कर वसूलता था। यह कर कृषि उपज के दसवें हिस्से के बराबर होता था। इस प्रकार राज्य के वित्तीय कामकाज का सारा बोझ करों के माध्यम से जनता वहन करती थी।

जीने का संघर्ष–फ्रांस की जनसंख्या के बढ़ने से अनाज की बढ़ती माँग, खाद्य पदार्थों की कीमत में तेजी से होती वृद्धि, मजदूरी का महंगाई की बढ़ती दर के अनुसार न बढ़ने आदि से गरीब-अमीर की खाई बढ़ती गई। सूखे व ओले के प्रकोप से पैदावार के गिरने से जीविका संकट पैदा हो जाता था। ऐसा जीविका संकट प्राचीन राजतंत्र (1789 से पहले के फ्रांसीसी समाज एवं संस्थाओं) के दौरान काफी आम था।

उभरते मध्यम वर्ग ने विशेषाधिकारों के अन्त की कल्पना की–अठारहवीं सदी में तीसरे एस्टेट में एक नये शिक्षित और समृद्ध सामाजिक समूह का उदय हुआ जिसे मध्य वर्ग कहा गया। तृतीय एस्टेट में सौदागरों एवं निर्माताओं के इस मध्य वर्ग के अलावा प्रशासनिक सेवा व वकील जैसे पेशेवर लोग भी शामिल थे। इन लोगों ने विशेषाधिकारों की व्यवस्था वाले शासन के अन्त की कल्पना की। किसी भी व्यक्ति की सामाजिक हैसियत का आधार उसकी योग्यता होनी चाहिए। स्वतंत्रता, समान नियमों तथा समान अवसरों के विचार पर आधारित यह परिकल्पना जॉन लॉक, रूसो जैसे दार्शनिकों ने प्रस्तुत की। मांटेस्क्यू ने शक्ति पृथक्करण के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। फ्रांसीसी चिंतकों के लिए अमेरिकी संविधान और उसमें दिए गए व्यक्तिगत अधिकारों की गारंटी प्रेरणा का एक महत्त्वपूर्ण स्रोत थी। इसी समय राज्य के खर्चों को पूरा करने के लिए लुई XVI द्वारा फिर से कर लगाए जाने की खबर से विशेषाधिकार वाली व्यवस्था के विरुद्ध गुस्सा भड़क गया।

II. क्रांति की शुरुआत–

(1) फ्रांसीसी सम्राट लुई सोलहवें ने 5 मई, 1789 को नये करों के प्रस्ताव के अनुमोदन के लिए एस्टेट्स जेनराल (प्रतिनिधि सभा) की बैठक बुलाई। इसमें पहले और दूसरे एस्टेट के 300-300 प्रतिनिधि थे तथा तीसरे एस्टेट के 600 प्रतिनिधि थे।

(2) एस्टेट जेनराल के नियमों के अनुसार प्रत्येक वर्ग को एक मत देने का अधिकार था। लेकिन इस बार तीसरे वर्ग के प्रतिनिधियों ने पूरी सभा द्वारा मतदान किए जाने की माँग रखी।

(3) तृतीय एस्टेट के प्रतिनिधि 'पूरी सभा द्वारा मतदान' की अपनी मांग के अस्वीकार होने पर, विरोध जताते हुए सभा से बाहर चले गये।

(4) 20 जून, 1789 को ये लोग वर्साय के इन्डोर टेनिस कोर्ट में जमा हुए। उन्होंने स्वयं को नेशनल असेम्बली घोषित किया तथा शपथ ली कि सम्राट की शक्तियों को कम करने वाला संविधान बनाने तक असेम्बली भंग नहीं होगी।

(5) पावरोटी की आसमान छूती कीमतों के कारण जनता भी आंदोलित थी। दूसरी तरफ सम्राट ने सेना को पेरिस में प्रवेश करने का आदेश दे दिया था। ऐसी स्थिति में क्रुद्ध भीड़ ने 14 जुलाई, 1789 को बास्तील पर धावा बोलकर उसे नेस्तनाबूद कर दिया।

(6) देहाती क्षेत्रों में किसानों ने कुदालों और बेलचों से ग्रामीण किलों पर आक्रमण कर दिया, अन्न भंडारों को लूट लिया तथा लगान सम्बन्धी दस्तावेजों को जलाकर राख कर दिया। कुलीन बड़ी संख्या में जागीरें छोड़कर भाग गए।

(7) अन्ततः लुई सोलहवें ने नेशनल असेम्बली को मान्यता दे दी और यह भी मान लिया कि उसकी सत्ता पर अब से संविधान का अंकुश होगा। 4 अगस्त, 1789 की रात को असेम्बली ने करों, कर्त्तव्यों तथा बन्धनों वाली सामन्ती व्यवस्था के उन्मूलन का आदेश पारित कर दिया। पादरी वर्ग के लोगों को अपने विशेषाधिकारों को छोड़ने के लिए विवश किया गया तथा धार्मिक कर समाप्त कर दिया गया तथा चर्च के स्वामित्व वाली भूमि जब्त कर ली गई। इस प्रकार कम से कम 20 अरब लिब्रे की सम्पत्ति हाथ में आ गई।

फ्रांस संवैधानिक राजतंत्र बन गया–नेशनल असेम्बली ने सन् 1791 में संविधान का प्रारूप पूरा कर लिया। सम्राट् की शक्तियों को विधायिका, कार्यपालिका एवं न्यायपालिका में हस्तांतरित कर दिया गया। इस प्रकार फ्रांस में संवैधानिक राजतंत्र की नींव पड़ी। इस संविधान ने कानून बनाने का अधिकार नेशनल असेम्बली को सौंप दिया। संविधान पुरुष एवं नागरिक अधिकार घोषणा-पत्र के साथ शुरू हुआ जिसमें जीवन, स्वतन्त्रता तथा कानून के समक्ष समानता के अधिकार प्रत्येक व्यक्ति को जन्म से प्रदान किये गए। लेकिन नेशनल असेम्बली के चुनाव में सभी नागरिकों को मतदान का अधिकार नहीं था। केवल सक्रिय पुरुषों (जो कम से कम तीन दिन की मजदूरी के बराबर कर चुकाते थे) को ही मत देने का अधिकार था। निर्वाचक की योग्यता प्राप्त करने तथा असेम्बली का सदस्य होने के लिए लोगों का करदाताओं की उच्चतम श्रेणी में होना जरूरी था।

III. फ्रांस में राजतंत्र का उन्मूलन और गणतंत्र की स्थापना–

(1) 1791 के संविधान से सिर्फ अमीरों को ही राजनैतिक अधिकार प्राप्त हुए थे। देश की आबादी के एक बड़े हिस्से को यह लगने लगा कि क्रांति के सिलसिले को आगे बढ़ाने की जरूरत है। समाज के कम समृद्ध हिस्से के लोगों ने अपने आपको संगठित किया ये जैकोबिन क्लब के सदस्य थे। उनका नेता मैक्स मिलियन रोबे स्पियर था। जैकोबिनों के एक बड़े वर्ग ने कुलीनों से अपने को अलग दिखाने के लिए धारीदार लम्बी पतलून पहनने का निर्णय लिया। इसलिए इन्हें 'सौं कुलौत' के नाम से जाना गया। ये स्वतंत्रता की प्रतीक लाल रंग की टोपी भी पहनते थे और सन् 1792 की गर्मियों में इन्होंने (जैकोबिनों ने) खाद्य पदार्थों की महँगाई एवं अभाव से क्रुद्ध होकर 10 अगस्त को ट्यूलेरिए के महल पर धावा बोल दिया। राजा को कई घंटों तक बंधक बनाए रखा। बाद में असेंबली ने शाही परिवार को जेल में डाल देने का प्रस्ताव पारित किया।

(2) 1792 में नये चुनाव कराये गये। 21 वर्ष से अधिक उम्र वाले सभी पुरुषों को मतदान का अधिकार दिया गया। नवनिर्वाचित असेम्बली को कन्वेंशन का नाम दिया गया। 21 सितम्बर, 1792 को इसने फ्रांस में राजतन्त्र का अन्त कर दिया तथा फ्रांस को एक गणतन्त्र घोषित कर दिया।

(3) लुई सोलहवें को न्यायालय द्वारा देशद्रोह के आरोप में मौत की सजा सुनाई गई तथा 1793 में प्लेस डी लॉ कॉन्कॉर्ड में उसे सार्वजनिक रूप से फाँसी दे दी गई।

आतंक राज–

(1) सन् 1793 से 1794 तक का काल फ्रांस में आतंक का युग कहा जाता है। जैकोबिन नेता रोबेस्पियर ने अपनी नीतियों को बहुत सख्ती से लागू किया। हजारों व्यक्तियों को मौत के घाट उतारा गया।

(2) अन्ततः जुलाई, 1794 में न्यायालय द्वारा रोबेस्पियर को दोषी ठहराया गया तथा गिरफ्तार करके अगले ही दिन मृत्युदण्ड दे दिया गया।

डिरेक्ट्री शासित फ्रांस–

(1) जैकोबिन सरकार के पतन के बाद मध्य वर्ग के सम्पन्न तबके के पास सत्ता आ गई। नए संविधान के तहत सम्पत्तिहीन तबके को मताधिकार से वंचित कर दिया गया। इस संविधान में दो चुनी गई विधान परिषदों का प्रावधान था जिन्होंने पाँच सदस्यों वाली कार्यपालिका—डिरेक्ट्री—को नियुक्त किया।

(2) डिरेक्ट्री और विधान परिषदों के पारस्परिक झगड़े के कारण डिरेक्ट्री की राजनीतिक अस्थिरता ने सैनिक तानाशाह—नेपोलियन बोनापार्ट के उदय का मार्ग प्रशस्त किया।

IV. क्या महिलाओं के लिए भी क्रांति हुई?–महिलाएँ शुरू से ही फ्रांसीसी समाज में अहम् परिवर्तन लाने वाली गतिविधियों में सक्रिय रूप से शामिल थीं। लेकिन महिलाएँ इस बात से निराश हुईं कि 1791 के संविधान में उन्हें निष्क्रिय नागरिक का दर्जा दिया गया था। परिणामतः महिलाओं के अनेक राजनैतिक क्लबों तथा अखबारों के माध्यम से मताधिकार, असेंबली के लिए चुने जाने तथा राजनैतिक पदों की माँग की। प्रारंभिक वर्षों में क्रांतिकारी सरकार ने महिलाओं के जीवन में कुछ शैक्षिक, वैवाहिक तथा व्यावसायिक सुधार लाने वाले कुछ कानून लागू किए। फिर भी राजनैतिक अधिकारों के लिए महिलाओं का संघर्ष जारी रहा। अन्ततः सन् 1946 में फ्रांस की महिलाओं ने मताधिकार हासिल कर लिया।

V. दास प्रथा का उन्मूलन–फ्रांसीसी उपनिवेशों में दास प्रथा का उन्मूलन जैकोबिन शासन के क्रांतिकारी सामाजिक सुधारों में से एक था। 1794 के कन्वेंशन ने फ्रांसीसी उपनिवेशों में सभी दासों की मुक्ति का कानून पारित किया। लेकिन यह कानून एक छोटी-सी अवधि तक ही लागू रहा। दस वर्ष बाद नेपोलियन ने दास प्रथा पुनः प्रारम्भ कर दी। 1848 में दास प्रथा को पूर्णतः समाप्त कर दिया गया।

VI. क्रांति और रोजाना की जिंदगी–1789 में 'सेंसरशिप की समाप्ति' का कानून अस्तित्व में आया तथा अधिकारों के घोषणापत्र से भाषण एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को नैसर्गिक अधिकार घोषित कर दिया। प्रेस की स्वतंत्रता का परिणाम यह हुआ कि अब किसी भी घटना पर परस्पर विरोधी विचार भी व्यक्त किये जा सकते थे। इससे फ्रांस के पुरुषों, महिलाओं और बच्चों के विचारों में अनेक परिवर्तन आए।

सारांश–स्वतन्त्रता और जनवादी अधिकारों के विचार फ्रांसीसी क्रांति की सबसे महत्त्वपूर्ण विरासत थे। उन्नीसवीं शताब्दी में ये विचार शेष यूरोप में फैले तथा वहाँ सामंती व्यवस्था नष्ट हुई।

क्रियाकलाप

पृष्ठ 5

प्रश्न–पाठ्यपुस्तक में दिये गये चित्र में चित्रकार ने कुलीन व्यक्ति को मकड़े और किसान को मक्खी के रूप में क्यों चित्रित किया है?

उत्तर–मक्खी एक जगह से दूसरी जगह जाकर, श्रम करके अपना भोजन एकत्रित करती है, जबकि मकड़ा एक जाल बनाकर बैठा रहता है तथा उसमें मक्खी को फंसाकर उससे अपना भोजन प्राप्त करता है। क्रांति से पहले के फ्रांसीसी समाज में कुलीन व्यक्तियों ने इस प्रकार का शासन तंत्र विकसित कर रखा था जिसके जाल में किसान फंसे हुए थे। किसान बहुत मेहनत करके अन्न उपजाते थे जबकि कुलीन कुछ नहीं करते थे और किसान से कर के रूप में अन्न, धन, सामग्री आदि प्राप्त करते थे। इसलिए चित्रकार ने कुलीन व्यक्ति को मकड़ा तथा किसान को मक्खी के रूप में चित्रित किया है।

पृष्ठ 6

प्रश्न–नीचे दिये गए शब्दों में से सही शब्द चुनकर पाठ्यपुस्तक में दिये गये चित्र-4 (पृष्ठ 6) के रिक्त स्थानों को भरें–

खाद्य दंगे, अन्नाभाव, मृतकों की संख्या में वृद्धि, खाद्य पदार्थों की बढ़ती कीमत, कमजोर शरीर।